कलीसिया अध्याय 19

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज़ सुनने के लिए ***प्रार्थना*** करें।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **कुलुस्सियों 3-4 व 1 थिस्लुनिकियों 1**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (कुलुस्सियों 3-4 व 1 थिस्लुनिकियों 1) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह के लिए तैयारी]* **(6)यूहन्ना 5:24**

दो दो करके *पुनरावलोकन करें।*

(2) यूहन्ना 5:24। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[कलीसियाई समारोह]* **मसीही विवाह**

परिचय। यह शिक्षा मसीही विवाह के सम्बन्ध में है। हम लोग सीखेगें की बाइबल विवाह व शादी के बारे में क्या कहती है।

क. विवाह की विशेषताएं

1.विवाह परमेश्वर की योजना, परमेश्वर का अध्यादेश और परमेश्वर की संस्थापना है।

खोजें और चर्चा करें। इस गद्यांश में विवाह के बारे में क्या सिखाया गया है?

(1) विवाह दो विपरीत लिंगों के बीच एक रिश्ता है।

पढ़ें उत्पत्ति 1:26-28; 2:18-24; नीतिवचन 5:15-19।

ध्यान दें। जब परमेश्वर ने सारे जगत की रचना करने की योजना बनायी, तो उसने सारी चीजों को इस तरीके से नियोजित किया कि सारे वर्ग लगातार बने रहें और बढ़ते रहें। परमेश्वर ने दो प्रकार के लिंगों का निर्माण किया और उसका उनके लिए विशेष उद्देश्य था। पुरूष और स्त्री दोनों मिलकर परमेश्वर के सम्पूर्ण स्वरूप को प्रगट करते हैं। और विवाह के द्वारा वे एक छोटे परिवार की इकाई का निर्माण करते हैं, जो कि एक विशाल सहभागिता की नींव होता है। परमेश्वर ने यौन सम्बन्ध को इसलिए बनाया ताकि:

- पति और पत्नी आपस में एक मजबूत एक को बना सकें।
- वे विवाह का आनन्द उठा सकें।
- मानव जाति का सारे संसार भर में विस्तार होता रहे
- यौन अनैतिकता के कारण (ग्रीक : पोर्निया) "हर एक पुरूष के पास अपनी पत्नी और हर एक स्त्री के पास अपना पति हो(1 कुरिन्थियों 7:2)।

(2) विवाह परमेश्वर का एक अध्यादेश व संस्थान है।

पढ़ें उत्पत्ति 2:24; मत्ती 19:4-6; इफिसियों 5:31।

ध्यान दें। विवाह किसी मनुष्य या किसी समाज की खोज या अनुसंधान नहीं है। बाइबल तथा यीशु मसीह में होकर अपने आप को प्रगट करने वाले परमेश्वर ने पुरूष और स्त्री के मन में विवाह की ज़रूरत और इच्छा को रचा। पहले ही आदमें से *पहले* पाप में गिर चुकी थी,लेकिन परमेश्वर ने अपनी योजना को विवाह के माध्यम से प्रगट किया(उत्पत्ति 2:24)। उसने विवाह के रिश्ते को बनाया और स्थापित किया ताकि जिस रिश्ते के तहत एक पुरूष और स्त्री आपस में <u>विवाह</u> करें:

- उसके तहत वे अपने माता पिता को छोड़ दें।
- एक पुरूष और एक स्त्री के बीच एकता स्थापित हो सके।
- और वे अपने विवाह की सीमा के अन्तर्गत एक दूसरे के साथ सहवास कर सकें।

मत्ती 19 और इफिसियों 5 के अनुसार, परमेश्वर ने भी पुरूष और स्त्री के पाप में गिरने के *पश्चात* इस अध्यादेश और संस्थान को बना कर रखा है। यीशु मसीह और पॉलुस दोनों ने ही उत्पत्ति 2:24 में परमेश्वर द्वारा स्थापित किये गये विवाह के सस्थान को धरती पर पाये जाने वाले सारे राष्ट्रों और समाज के लोगों के लिए प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में होने की मुहर लगा दी!

(3) विवाह परमश्वेर और उसके लोगों के बीच रिश्ते की एक प्रत्यक्ष तस्वीर है।

पढ़ें यिर्मयाह 3:1; इफिसियों 5:22-25

ध्यान दें। पुराने नियम में, मानवीय विवाह परमेश्वर व धरती पर रहने वाले उसके लोगों के बीच रिश्ते की एक प्रत्यक्ष तस्वीर को प्रगट करता है। जो व्यक्ति परमेश्वर से फिर जाता है वह परमेश्वर की निगाहों में एक व्यभिचारिणी के समान ठहरता है।

नये नियम में, विवाह यीशु मसीह और मसीही कलीसिया के बीच रिश्ते की गवाही की प्रत्यक्ष तस्वीर को प्रगट करता है।

हालांकि विगत वर्षों में संसार में पायी जाती संस्कृति ने परमेश्वर के मूल विवाह संस्थान[2] की परिभाषा बदल दी है, परमेश्वर आज भी चाहते हैं कि सभी जातियों और संस्कृतियों के लोग विवाह के मूल अध्यादेश व संस्थान की ओर वापस आ जाएं।

2 उदाहरण के लिए: रखैल रखना, बहुत विवाह, बहुपत्नि रखने वाला, इश्कबाज, हर प्रकार के अनैतिक यौनाचार करना!

2. विवाह एक नियोजित व प्रेम विवाह भी हो सकता है।

खोजें और चर्चा करें एक नियोजित और प्रेम विवाह क्या फायदे व क्या नुकसान होते हैं?

पढ़ें उत्पत्ति 24:1-4, 67; उत्पत्ति 29:16:20; भजन 127:1-2; मत्ती 19:6।

ध्यान दें। पश्चिमी संस्कृति में, पुरुष उन स्त्रियों से विवाह करना पसन्द करते हैं जिन्हें वे प्रेम करते हैं। पूर्वी और मध्यपूर्वी देशों में पुरुष वर्ग जिस स्त्री से विवाह करता है उससे प्यार करना सीख लेता है। पाश्चात्य देशों में इस रिश्ते की शुरूआत काफी भावनात्मक तरीके से होती है, बाद में वे इस नाम देने के लिए समर्पण करते हैं। जबकि पूर्वी देशों में वे अपनी इच्छाओं के समर्पण से शुरूआत करते हुए अपने प्रेम व भावों को प्रगट करते हैं। अगर बाइबल का परमेश्वर दोनों की तरीकों से किये जाने वाले विवाहों को केन्द्र बिन्दू है तो वे विवाह निश्चय ही मज़बूती से टिके रहेगें।

3. विवाह दो विश्वासियों(मसीहियों) के बीच में होना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल किसी अविश्वासी से विवाह करने के बारे में क्या कहती है?

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 7:3-4; 1 कुरिन्थियों 7:16,39; 2 कुरिन्थियों 6:14।

ध्यान दें: परमेश्वर ने मसीहियों को अन्यजातियों से विवाह करने के लिए मना किया है।

पापमय प्रवृति, संसार में टूटेपन और बहुत सी लड़ाईयों के कारण, बहुत सी मसीही महिलाओं को विवाह करने के लिए मसीही पुरूष ही नहीं मिलते। इसी तरह तस्वीर के दूसरे पहलू को देखें तो मसीही जवानों को भी विवाह करने के लिए मसीही युवतियां नहीं मिलतीं। इन मसीही महिलाओं और पुरूषों को गैर मसीह समाज में विवाह

करने की अनुमति देने की बजाय हम अपने देश में प्रयास करके बहुत से स्त्री व पुरूषों को मसीह में जीत सकते हैं।

पौलुस ऐसे मसीही जन को सावधान करते हुए कहता है कि कोई ऐसा न सोचे कि वह किसी गैर मसीह जन से विवाह करके बाद में उसे विश्वास में ला सकता है(1कुरिन्थियों 7:16)! यह एक गलतफहमी है, क्योंकि कोई मनुष्य किसी से यीशु मसीह को स्वीकार करने के लिए जबरजस्ती नहीं कर सकता। यह तो परमेश्वर का ही विशेषाधिकार है(यूहन्ना 6:44)। इसलिए एक मसीही जन को अक्खड़ या परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारी नहीं होना चाहिए। "असमान जुए में जुतकर" विवाह करना परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध है। इस उस विश्वासी और उसकी सन्तानों को परेशानी होगी!

4. विवाह केवल एक ही पत्नी से होना चाहिए।

खोजे व चर्चा करें। बाइबल रखैल या उपपन्यिों के बारे में क्या कहती है?

(1) एकपत्नीवाद, सृष्टि के समय में परमेश्वर की योजना थी।

पढ़ें 1 राजा 11:1-11।

ध्यान दें। बाइबल में विवाह से सम्बन्धित अच्छे और बुरे दोनों ही प्रकार की ऐतिहासिक घटनाएं लिखी हुई हैं, लेकिन ये घटनाएं शिक्षा देने या मसीही विवाह में बर्ताव को प्रासमिक करने वाली नहीं हैं। उदारहण के तौर पर, बाइबल का इतिहास इस बात का वर्णन करता है कि उसमें राजा दाऊद और राजा सुलैमान जैसे लोगों की एक से ज्यादा पत्नियां थीं, जो कि परमेश्वर द्वारा बनायी गयी परमेश्वर की योजना के बिल्कुल विरूद्ध थी(उत्पत्ति 2:24)। बहुत से संस्कृतियों में बहुपतिवाद (अर्थात एक स्त्री जिसके एक से ज्यादा पति हों) और बहुतों में बहुपत्निवाद (अर्थात एक पति जिसकी एक से ज्यादा पत्नियां हों)पाया जाता है। बहुपतिवाद या बहुपत्निवाद से केवल यौन अनैतिकता, जलन, भेदभाव, उपद्रव और मूर्तिपूजा जैसी समस्याएं खड़ी होती हैं। लेकिन विवाह सम्बन्धी *बाइबल की आज्ञाएं और शिक्षाएं* हमेशा मसीही सिद्धान्तों और व्यवहारों के लिए प्रासमिक होती हैं।

(2) पतन के बाद एकपतिवाद या एक पत्नीवाद परमेश्वर की योजना बनी रही।

पढ़ें उत्पत्ति 2:24; मत्ती 19:5।

ध्यान दें। परमेश्वर ने उत्पत्ति 2:24 में बनायी गयी अपनी योजना को कभी नहीं बदला। परमेश्वर ने कभी नहीं कहा,"कि पुरूष *अपनी पत्नियों* के साथ जुड़ा रहे"(बहुवचन), वरन "अपनी पत्नी के साथ जुड़ा रहे"(एक वचन)!" उसने मसीही वैवाहिक सम्बन्ध से बाकि सब लोगों (पुरुषों व स्त्रियों को) को बिल्कुल अलग कर दिया। विवाह के बाहर सहवास निषेध है!

परमेश्वर बहुतपतिवाद और बहुपत्नीवाद की अनुमति नहीं देते हैं। वह रखैल रखने के लिए मना करते हैं। वह व्यभिचार के लिए मना करते हैं। वह विवाह से पूर्व और विवाह के दायरे के बाहर सहवास करने के लिए मना करते हैं(इब्रानियों 13:4)और वह विवाह किये बगैर एक साथ रहने की भी अनुमति प्रदान नहीं करते। और परमेश्वर इश्कबाज़ी से घृणा करते हैं, क्योंकि इसके अन्तर्गत असंयम, स्वाथी-प्रेम, और कुटिल वातारण में प्रणयनिवेदन और प्रेम प्रदर्शित किया जाता है(उत्पत्ति 3:1-5; 2कुरिन्थियों 11:1-2; 2 तीमुथीयुस 3:1-6)।

5. विवाह पूर्ण जीवनकाल के लिए होता है।

खोजे और चर्चा करें। परमेश्वर विवाह की अवधी के विषय में क्या कहते हैं?

(1)परमेश्वर एक पुरुष और एक स्त्री को जीवनभर के लिए जोड़ते हैं।

पढ़ें 2 कुरिन्थियों 6:14; मत्ती 19:3-6।

ध्यान दें। क्योंकि परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में एक वाचा का सम्बन्ध होता है, इसलिए मसीही विवाह का सम्बन्ध भी सम्पूर्ण जीवनकाल के लिए एक विश्वासयोग्य रिश्ता होना चाहिए। एक मसीही व्यक्ति की यह ज़िम्मेदारी है कि वह विवाह करने के लिए केवल एक विश्वासी का ही चुनाव करे (2कुरिन्थियों 6:14)। और जब उनका विवाह होता है तो परमेश्वर दोनों को विवाह के माध्यम से सम्पूर्ण जीवनकाल के लिए एक साथ जोड़ देते हैं(मत्ती 19:5-6)। यीशु सिखाते हैं कि:"जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे कोई मनुष्य अलग न करे(ग्रीक भाषा में यह निषेध है)"! मसीही विवाह के अन्तर्गत बाइबल का परमेश्वर एक मसीही पुरूष व एक मसीही स्त्री को सम्पूर्ण जीवन के लिए एक साथ जोड़ते हैं।

(2) बाइबल में तलाक।

पढ़ें मलाकी 2:16; मत्ती 19:9; 1 कुरिन्थियों 7:12-16।

ध्यान दें। परमेश्वर कहते हैं,"मैं स्त्री-त्याग से घृणा करता हूँ, और उस से भी जो अपने वस्त्र को उपद्रव से ढांपता है।" परमेश्वर तलाक को जीवन साथी के साथ किया जाने वाला उपद्रव मानते हैं और उससे घृणा करते हैं। लेकिन, संसार में पाप होने के कारण, बाइबल विवाह में अविश्वासयोग्यता व असामंजस्य होने की दशा में तलाक की अनुमति प्रदान करती है। वैवाहिक अविश्वासयोग्यता को मूर्तिपूजा(झूठा धर्म), अनैतिक यौनाचार व विवाह में उपद्रव(मत्ती 19:8-9) के रूप में दर्शाया गया है। और *वैवाहिक असामंजस्य* तब उत्पन्न होता है जब एक गैर-मसीही जीवन साथी, अपने मसीही जीवन साथी के साथ रहने से इनकार कर देता है। (1कुरिन्थियों 7:12-16)। (देखें मैनुएल 8,अध्याय 41)।

(6) विवाह लौकिक, अर्थात वह कवेल धरती पर जीवन तक ही मान्य है।

खोजें और चर्चा करें। क्या विवाह मृत्यु के बाद भी बना रहता है? मृत्यु का वैवाहिक सम्बन्ध में क्या प्रभाव पड़ता है?

(1) जब तक विवाह से जुड़े दोनो पक्ष जीवित हो विवाह की मान्यता होती है।

पढ़ें रोमियों 7:2; 1 कुरिन्थियों 7:39।

ध्यान दें। पौलुस अपनी शिक्षा में बताता है कि विवाह दोनों पक्षों के जीवित रहने तक ही मान्य होता है। यदि कोई एक साथी गुज़र जाएं तो दूसरा साथी किसी दूसरे मसीही जन के साथ पुन:विवाह करने के लिए स्वतन्त्र होता है।

(2) विवाह धरती पर परमेश्वर की योजना या संस्थान है स्वर्ग में नहीं।

पढ़ें मत्ती 22:23-32।

ध्यान दें। यीशु सिखाते हैं कि मृतकों में से जी उठने के बाद, लोगों में कोई शादी-विवाह नहीं होगा। उस समय पर जी उठे मसीही स्वर्ग में स्वर्गदूतों के समान होगें। लेकिन इस धरती पर पाये जाने वाले सारे रिश्ते, जिसमें विवाहित जीवन साथी भी शामिल है, धरती पर व्यतीत करने वाले जीवन की तुलना में स्वर्ग में और ज्यादा सार्थक और सन्तोषजनक होगें क्योंकि हर एक जन स्वयं परमेश्वर की प्रत्यक्ष उपस्थिति में सिद्ध जीवन व्यतीत कर रहा होगा। अत: विवाह केवल *धरती* के लिए ही परमेश्वर की योजना है न कि स्वर्ग के लिए।

मसीही विवाह की अहमियत निम्नलिखित चिजों में पता लगाई जा सकती है:

- मसीही विवाह, मसीही चरित्र का निर्माण करता है(देखें 1 यूहन्ना 3:1-3)
- मसीही विवाह मसीह की घोषणा करता और उसे प्रगट करता है(इफिसियों 5:22,25)
- मसीही विवाह इस धरती पर (उत्पत्ति 1:28) और नयी धरती(प्रकाशितवाक्य 7:9)पर मसीहीयों की संख्या में गुणन करता है।

7. अधिकतर लोगों के लिए विवाह एक सामान्य रिश्ता होता है, लेकिन यह हर एक के लिए उत्तम रिश्ता नहीं होता, क्योंकि हो सकता है कि उस व्यक्ति के लिए परमेश्वर की कुछ और ही योजना हो।

खोजें और चर्चा करें। विवाह सबके लिए उत्तम क्यों नहीं है?

पढ़ें मत्ती 19:10-12; 1 कुरिन्थियों 7:8-9,25-35; 1 कुरिन्थियों 9:5; 1तीमुथीयुस 3:2;4:3;यशायाह 54:1-5।

ध्यान दें। बाइबल में मसीही जनों और मसीह अगुवों के लिए विवाह एक सामान्य बात है(1कुरिन्थियों 9:5;1 तीमुथीयुस 3:2; 4:3)।

लेकिन अकेले या अविवाहित दशा में जीवन बिताना भी कोई श्राप या दण्ड नहीं है। और ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करना भी विवाह करने का चुनाव करने से अधिक "आत्मिक" नहीं है। ब्रह्मचर्य एक आत्मिक वरदान है(1कुरिन्थियों 7:32-35;मत्ती 19:10-12)लेकिन इसे किसी दूसरे पर थोपा नहीं जा सकता।

प्रभु यीशु (मत्ती 19:10-12) और प्रेरित पौलुस (1कुरिन्थियों 7:32-35) उन लोगों से विशेषतौर पर कुछ कहना चाहते हैं जो अविवाहित रहने का मन बना चुके हैं। परमेश्वर अपने किसी विशेष कार्य को करवाने के लिए किसी व्यक्ति को कुछ समय के लिए या पूरे जीवनकाल के लिए अविवाहित जीवन बिताने की बुलाहट प्रदान करते हैं। परमेश्वर इन लोगों को अविभाजित समर्पण के साथ उसकी सेवा करने के लिए इन्हें बुलाते हैं! जो लोग अविवाहित दशा में जीवन व्यतीत करते हैं उनके लिए परमेश्वर की विशेष प्रतिज्ञा है-उनके पास विवाहित लोगों के बच्चों की

तुलना में अधिक आत्मिक बच्चे होगें। उसका यह वायदा है कि वह उन्हें परमेश्वर के राज्य के कामों में अत्यधिक फलदायक बनाएगा(यशायाह 54:1-5)!

ख. मसीह पतियों और मसीही पत्नियों की जिम्मेदारियां

परिचय। परमेश्वर ने ही हर एक पुरुष और हर एक स्त्री को बनाया है। परमेश्वर ने विवाह की रचना उस समय तक नहीं की थी जब तक कि उसने हव्वा को नहीं बना लिया था(उत्पत्ति 2:18-24)। इसलिए विवाहित पुरुष और विवाहित स्त्री की एक दूसरे प्रति जिम्मेदारियों को निर्धारित करने की जिम्मेदारी भी परमेश्वर की है। वह जानता है कि उसकी सृष्टि किस प्रकार से एक दूसरे के साथ सही तालमेल बैठा सकते हैं। पति,पत्नी परमेश्वर द्वारा दी गयी जिम्मेदारियों का पालन करें तो ही, वे स्वस्थ वैवाहिक जीवन का आनन्द उठा सकते हैं।

कई लोग तर्क पेश करते हैं कि बाइबल में लिखी गयीं विवाह सम्बन्धी जिम्मेदारियां सस्कृतियों पर आधारित हैं इसलिए उन्हें वर्तमान काल के मसीहियों के लिए मापदण्ड या पैमाना नहीं माना जा सकता। यह एक खतरनाक बहस है, *क्योंकि बाइबल में परमेश्वर जो कुछ आज्ञा देते, मना करते और शिक्षा प्रदान करते हैं वह हमेशा ही प्रासमिक या पैमाना बनी रहती है, क्योंकि परमेश्वर संसार की सारी पापमयी संस्कृति को बदलना चाहते हैं!* (देखें मैनुएल 6, अध्याय 23,जिसमें मानवीय संस्कृति और परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के बारे में वर्णन किया गया है)

1. परमेश्वर द्वारा दी गयी पति व पत्नी की एक दूसरे के प्रति पारस्परिक जिम्मेदारियां।

पढ़ें इफिसियों 5:22-25

ध्यान दें। मसीही विवाह यीशु मसही और मसीही कलीसिया के बीच रिश्ते को दर्शाता है और संसार को मसीह के बारे में बताता है। एक आदर्श मसीही वैवाहिक जीवन को *देखने* पर,संसार के लोग अधिक से अधिक यीशु मसीह (और मसीही कलीसिया के बारे मे) सीखते हैं। वे केवल उनके प्रति परमेश्वर के प्रेम के बारे में *सुनते* ही नहीं वरन मसीही विवाह में प्रत्यक्ष रूप में इस प्रेम को *देखते* भी हैं। वे केवल जीवते परमेश्वर के साथ बढ़ते हुए आनन्द के बारे में सुनते ही नहीं वरन वे मसीही विवाह (और मसीही कलीसिया में) इस आनन्द को अपनी आखों से देखते भी हैं। मसीही विवाह का रिश्ता यीशु मसीह के साथ सम्बन्ध की वास्तविकता की शक्तिशाली साक्षी और आकर्षण है। हर एक मसीही परिवार एक मिश्नरी प्रयास हो सकता है, खास तौर पर जब मसीही परिवार लोगों के लिए खुला हो और जहां लोग "आकर देख सकते हों"(यूहन्ना 1:40)कि यह परिवार वास्तव में कैसे रहता है।

परमेश्वर ने पति और पत्नी को ज़िम्मेदारियां और अधिकार दिये हैं ताकि वे एक दूसरे की सेवा में लगा सकें। लेकिन परमेश्वर ने उन्हें बिल्कुल अलग तरीके से रचा है और उन्हें आज्ञा दी है कि वे परमेश्वर द्वारा दी गयी ज़िम्मेदारियों और अधिकारों के द्वारा अलग अलग तरीके से एक दूसरे की सेवा करें। वह चाहता है कि मसीही परिवारों में पति पहल करने का काम करें। और वह चाहता है कि पत्नी अपने पति को गर्मजोशी से भरे मज़बूत रिश्ते के लिए आमन्त्रित करके अपनी सेवा को प्रगट करे।

2. परमेश्वर द्वारा पति को दी गयी विशेष ज़िम्मेदारी यह है कि पति अपनी पत्नी से प्रेम करे और उसकी अगुवाई करे।

पढ़ें, नीतिवचन 31:10-12,28; इफिसियों 5:25-29,33; 1पतरस 3:7।

(1) मसीही पति अपनी पत्नी से प्रेम करे।

पति अपनी पत्नी से ठीक वैसे ही प्रेम करे जैसे कि मसीह ने कलीसिया को निस्वार्थ भाव से उसमें रूचि दिखाकर, पूरे मन से उसे स्वीकार करके और उसे उत्तम बनने में सहायता करके प्रेम किया। प्रेम नि:स्वार्थ होता है और कभी अपना फायदा या बढ़ाई नहीं चाहता। प्रेम आत्म-त्याग करने वाली सेवा है। प्रेम का अर्थ अपनी पत्नी के साथ आदर और परवाह करते हुए व्यवहार करना है। प्रेम का अर्थ अपनी पत्नी के साथ भले समय या बुरे समय में, स्वस्थ या अस्वस्थ अवस्था में बने रहना है।

1 कुरिन्थियों 13:4-8 में प्रेम का सुन्दरता के साथ वर्णन किया गया है।

- जो प्रेम अधीर नहीं होता वह अपनी भावनाओं को प्रगट करने के लिए प्रतीक्षा कर सकता है और वह अपने आपको दूसरों पर थोपता नहीं है।
- कृपालु प्रेम, सदैव दूसरों की सहायता करने तथा भलाई करने के अवसर ढूँढ़ता है
- जलन न रखने वाला प्रेम, योग्य लोगों की प्रशंसा करने, उन्हें आदर देने तथा उन्हें श्रेय देने में उदार होता है।

न फूलने वाला प्रेम, अपनी उपलब्धियों के प्रति विनम्र होता है। वह किसी को प्रभावित करने का प्रयास नहीं करता।

- घमण्ड न करनेवाला प्रेम सदैव अपनी योग्यताओं और अपनी कमज़ोरियों को लेकर नम्र होता है।
- असभ्य तरीके से व्यवहार न करने वाला प्रेम,दूसरों के साथ बातचीत करने तथा रिश्ता कायम करते समय सभ्य आचरण व तरीकों का इस्तेमाल करता है।
- जो प्रेम खुद की ही बढ़ाई नहीं चाहता है वह नि:स्वार्थ है,विशेष तौर पर अपने अधिकार का इस्तेमाल करते समय।
- प्रेम जल्दी झुझंलाता नहीं वरन वह लोगों द्वारा मिलने वाले घावों व चोटों को विनम्रता से सह लेता है।
- गलतियों का लेखा न रखनेवाला प्रेम क्षमा करने वाला है, खास तौर पर टूटे रिश्तों में।
- दूसरों की कमजोरियों और असफलताओं के बावजूद, जो प्रेम बुराई से प्रसन्न नहीं होता वह धर्मी(खरा) है।

नीतिवचन 31 उसे प्रेम करने का दूसरा तरीका बताता है। जब किसी की पत्नी का चरित्र कुलीन होता है, तो उसके पति के मन में उसके प्रति विश्वास होता है। उदाहरण के लिए, पति अपनी पत्नी की सहायता पर निर्भर होने के कारण, उससे मदद मांगता है। सच्चा प्रेम उसे यह अहसास दिलाता है कि उसकी ज़रूरत है, लोग उसे चाहते हैं, वह बाकि लोगों से ज़्यादा महत्व रखती है और वह सराहनीय है। इस तरह से वह उसके लिए जीवन भर भली बनी रहेगी। इसलिए उसका पति और उसके बच्चे खड़े होकर उसकी प्रशंसा करते हैं।

(2) मसीह पति को अपनी पत्नी के अगुवाई करने के द्वारा उसकी सेवा करनी चाहिए।

जिस तरह से मसीह कलीसिया की अगुवाई करता है ठीक उसी प्रकार से उसे अपनी पत्नी की अगुवाई करनी चाहिए। जिस प्रकार से एक चरवाहा अपनी भेड़ों की चरवाही करता है:उसे खिलाता है, उसकी देखभाल करता,उसकी सुरक्षा करता और उसे हर मुश्किल परिस्थिति से बाहर निकालता है। उसे अपनी पत्नी की अगुवाई ठीक उस तरह से करनी चाहिए जिस प्रकार से कोई भण्डारी अपनी भण्डार को सम्भालता है: जो अपनी उपज, कामकाज और ब्याज की देखभाल करता है। उसे एक शिक्षक के समान उसकी अगुवाई करनी चाहिए जो उसे बाइबल की शिक्षाओं को समझने तथा व्यवहारिक जीवन में अभ्यास करने में मदद करे। उसे एक दास के समान अगुवाई करनी चाहिए खास तौर पर उन क्षेत्रों में जहां उसे उसकी विशेष जरूरत हो।

3. परमेश्वर द्वारा मसीही पत्नी को उसके पति के प्रति दी गयी जिम्मेदारियों में उसे प्रेम करना तथा उसकी सहायता करना आता है।

पढ़ें, उत्पत्ति 2:18; इफिसियों 5:22-24,33; तीतुस 2:4-5 ; 1 पतरस 3:1-6।

(1) मसीही पत्नी को अपने पति से प्रेम करके उसकी सेवा करनी चाहिए।

बाइबल सिखाती है कि मसीही पत्नियां अपने पति व बच्चों से प्रीति रखें; और संयमी, पवित्रता घर का कारबार करें,भली और अपने अपने पति के अधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाएं।(तीतुस 2:4-5)। इसके अलावा उसके प्रेम में 1 कुरिन्थियों 13 में दर्ज धीरज,भलाई अन्य गुण भी शामिल होना चाहिए। प्रेम का अर्थ अपने पति के साथ अच्छे और बुरे समय में, चंगाई में या बिमारी में बने रहना है।

काम करने वाली माता का मूल्यांकन करते समय एक तरफ तो आधुनिकता,भौतिकवाद, अपनी पहिचान और दूसरी ओर परमेश्वर के राज्य के प्रति उसकी रूची को लेकर किया जाना चाहिए।

(2) मसीही पत्नी को अपने पति की सहायता करनी चाहिए।

बाइबल हमें सिखाती है कि मसीही पत्नी को अपने पति के अधिकार का सम्मान करना चाहिए(या:अपने पति के अधीन होना चाहिए(इफिसियों 5:22-24; 1पतरस 3:1-6) और अपने पति का आदर करना चाहिए(इफिसियों 5:33)। वह स्वेच्छा से अपने पति का आदर करके तथा उसके निर्देशों को मानकर अपने पति की सेवा करती है। आज्ञाकारिता और अधीनता में यह अन्तर है कि एक व्यक्ति अपने अधिकारी की आज्ञा पालन करने के लिए मज़बूत होता है, लेकिन अधीनता स्वेच्छा से अपने आपको अपने पति की इच्छा के प्रति खुद को ढालना है। हो सकता है कि एक पति अपनी पत्नी से अधीनता की मांग न करे। यह केवल परमेश्वर का विशेषाधिकार है!

"अधीन होने का" अर्थ यह नहीं है कि वह किसी गुलाम की तरह व्यवहार करे, लेकिन एक सहायक की तरह उसके अधीन हो जाए(उत्पत्ति 2:18)। इसका अर्थ अपने पति के दल का स्वेच्छा से यथासम्भव उत्तम सदस्य बनकर उसकी सहायता करना है। उसके दल का सदस्य होने के नाते वह उसके सामने अपने विचार

रखती,सुझाव,सलाह देती, उसकी सहायता व सहयोग इत्यादि देते हुए,वह जो कुछ वह कर सकती है। वह अपने व्यक्तिगत जीवन, उनके विवाह,परिवार तथा सामाजिक विषयों पर अपने पति के साथ मिलकर चर्चा करती है। वह अपने पति के साथ मिलकर अच्छे चुनाव व निर्णय करती है और उन निर्णयों के परिणामों पर भी चर्चा करती है। लेकिन अगर आखरी क्षणों में, वे किसी निर्णय को लेकर पूरी तरह से सहमत नहीं हो पा रहे होते हैं तो,वह अन्तिम निर्णय करने तथा तदपश्चात उस निर्णय के परिणाम की ज़िम्मेदारी अपने पति को सौंप देती है। उसकी अधीनता परमेश्वर द्वारा कहे गये वचनों तक ही सीमित है लेकिन अगर उसका पति उससे कुछ अनुचित अर्थात परमेश्वर के वचन के विरूद्ध कुछ करने के लिए कहता है तो वह उसका विरोध कर सकती है(प्रेरितों 5:29)। यदि पति के निर्णयों से उसका,उसके पति का और किसी अन्य व्यक्ति का कोई भला न हो रहा हो तो वह गम्भीरता के साथ उसके निर्णयों,योजनाओं व चुनावों को बदलने के लिए कह सकती हैं। इस तरह से पति और पत्नी को एक साथ मिलकर एक दल के रूप में कार्य करना चाहिए। अपने पति का आदर करने का अर्थ है कि वह प्रेम के साथ अपनी बात को रखे और परमेश्वर को उसके तरीके से काम करने की अनुमति प्रदान करे। इसका अर्थ है कि वह गम्भीरता के साथ अपने पति की सलाह को सुने। इसका अर्थ है कि वह अपनी सारी योजनाओं में अपने पति का सहभागी करे और उस काम की प्रगति की जानकारी अपने पति को दे। इसका अर्थ है कि वह बिना पति के कहे स्वयं पहल करके अपने पति की सेवा करे। इसका अर्थ है कि वह धीरज के साथ अपने पति की समस्या और उसके दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करे।

सारांश। जब कोई पुरूष अपनी पत्नी को प्रेम करने तथा उसकी अगुवाई वैसे ही करता है जैसे मसीह ने अपनी कलीसिया को प्रेम किया और उसकी अगुवाई की तो, पत्नी के लिए अपने पति को प्रेम करते, उसके अधिकारों के अधीन होते,उसकी सहायता और उसका आदर करते हुए उसकी सेवा करना मुश्किल नहीं होगा। बच्चों के लिए वह सर्वश्रेष्ठ स्थान जहां पर वह प्रेम और आदर और अगुवाई और अधीनता के मतलब को बेहतर ढंग से सीख सकता है वह उसके मसीही माता पिता के बीच दैनिक रिश्ता है।

ग. मसीही विवाह समारोह

परिचय। मसीही विवाह एक सार्वजनिक, सामाजिक व धार्मिक समारोह है।

बाइबल में विवाह पूर्व सहवास,एक साथ रहना(बिना विवाह किये) और समलैंगिकों के बीच विवाह बिल्कुल मना है। मसीही विवाह आधिकारिक और सार्वजनिक तौर पर कुवारी अवस्था के अन्त व विवाहित होने के साथ प्रारम्भ होता है। बाइबल विवाह समारोह के सम्बन्ध में निम्न शिक्षा प्रदान करती है।

1. मसीह विवाह समारोह में तीन अखण्ड तत्व होते हैं।

पढ़ें उत्पत्ति 2:24; मत्ती 19:5-6; इफिसियों 5:31

खोजें व चर्चा करें। व्यवहारिक जीवन में विवाह से सम्बन्धित तीन अखण्ड तत्वों का क्या अभिप्राय है?

ध्यान दें। मत्ती 19:5-6 में यीशु सिखाते हैं कि 'इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होगें। अत: वे अब दो नहीं,परन्तु एक तन है। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे। परमेश्वर ने इस बात को सृष्टि के समय कहा था और पौलुस ने इसे कलीसिया के सन्दर्भ में कहा। अत: यह सिद्धान्त या शिक्षा परमेश्वर के लिए अति महत्वपूर्ण होगा! विवाह एक महत्वपूर्ण सामाजिक व धार्मिक घटना है। इस क्षण में एक आदमी और एक औरत अपने माता पिता को छोड़कर एक साथ एक नये परिवार की शुरूआत करते हैं। इस विवाह समारोह के तीन अखण्ड तत्व निम्नलिखित है: वे सार्वजनिक तौर पर अपने माता पिता से अलग हो जाते हैं, ताकि वे एक दूसरे के साथ जुड़, एक बदन हो जाएं।

(1) मसीही विवाह का अर्थ है: अपने अभिभावकों को छोड़ देना।

चाहे विवाह व्यवस्थित हो या प्रेम विवाह, एक आदमी और औरत के विवाह के बाद अपने माता पिता के घर को छोड़कर एक नये परिवार की शुरूआत करनी चाहिए। वह लड़का और लड़की विवाह करने की खबर देने तथा विवाह समारोह की तैयारी के साथ ही अपने माता पिता के सामने उनसे अलग होने की बात को प्रगट कर देते हैं। इसे सामान्य तौर पर *मंगनी* कहा जाता है। लेकिन वे विवाह पर सच में अपने माता पिता को छोड़ कहीं और रहने लग जाते हैं। विवाहित जोड़े के विविध तरीकों से अपने माता पिता से अलग हो जाना चाहिए:

उन्हें भावनात्मक तरीके से अपने माता पिता से अलग हो जाना चाहिए: विवाह के बाद में पुरूष और स्त्री को एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए तथा अपने माता पिता से अधिक एक दूसरे को प्राथमिकता देनी चाहिए।

- **उन्हें अपने माता पिता के अधिकार से बाहर आ जाना चाहिए।** इफिसियों 6:1-3 हमें सिखाता है कि जब तक बच्चे छोटे हैं, बच्चों को माता पिता का कहना मानना और उनका आदर करना चाहिए। लेकिन इफिसियों 5:31 सिखाता है कि जब से विवाह करें तो उन्हें अपने माता पिता को छोड़ देना चाहिए। विवाह के बाद से वे अपने माता पिता की आज्ञा के प्रति प्रतिबद्ध नहीं लेकिन उनके माता पिता का आदर करना उनका कर्तव्य है। "आदर करना " और "आज्ञा मानना" समान बात नहीं है। उदाहरण के लिए, माता पिता व सास-ससुर का किसी भी परिस्थिति में अपने पूर्व बच्चों पर कोई अधिकार नहीं है। सास का अपने बेटे की पत्नी अर्थात अपनी बहु पर कोई अधिकार नहीं है।
- **उन्हें अपने माता पिता पर आर्थिक निर्भरता को छोड़ देना चाहिए:** विवावित दंपत्ति को स्वयं अपनी आर्थिक ज़रूरतों का प्रबन्ध करना चाहिए।
- **उन्हें आत्मिक तौर पर अपने माता पिता को छोड़ देना चाहिए:** खास तौर पर जब उनके माता पिता गैर मसीही हों, तो उन्हें अपने माता पिता के विश्वास व मतों को अपने परिवार का हिस्सा नहीं बनाना चाहिए। उन्हें अपने घर व परिवार में केवल प्रभु यीशु मसीह की उपासना व सेवा करनी चाहिए।
- **उन्हें सामाजिक तौर पर अपने माता पिता से अलग हो जाना चाहिए:** यदि सम्भव हो तो, मसीही दंपत्तियों को अपने माता पिता से अलग रहने के लिए अलग घर की तलाश करनी चाहिए। निश्चय ही,कई संस्कृतियों में जवान बच्चे विवाह से पूर्व भी पढ़ाई करने या किसी दूसरे स्थान पर नौकरी करने के लिए अपने माता पिता का घर छोड़कर अलग से कमरे लेकर रहते हैं। यह बिल्कुल गलत नहीं है। अपने माता पिता को छोड़कर रहने के सारे पहलू माता पिता और अन्य लोगों के सम्मुख यह दर्शाते हैं कि विवाहित जोड़ा अपने माता पिता पर निर्भर नहीं है वरन उन्होंने अपने परिवार की शुरूआत कर दी है।

(2) मसीही विवाह का अर्थ: एक दूसरे के साथ जुड़ जाना है।

मसीही विवाह एक सार्वजनिक,सामाजिक और धार्मिक समारोह है जिसके दौरान एक पुरूष और एक स्त्री, लोगों और परमेश्वर की उपस्थिति में एक दूसरे के साथ वाचा बांधते हैं। वे कसम खाते हैं कि जब तक कि मृत्यु उन्हें अलग न करे वे एक दूसरे के प्रति समर्पित और विश्वासयोग्य बने रहेगें। मलाकी 2:13-16 में परमेश्वर कहते हैं,"परमेश्वर तेरे और तेरी जवानी की पत्नी के बीच में एक साक्षी बना है" ताकि तू उसके साथ में बाँधी गयी विवाह की वाचा को न तोड़े। विवाह के समारोह के दौरान परमेश्वर स्वयं पुरुष और स्त्री को एक बनाते हैं और उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे एक दूसरे का विश्वास तोड़कर तलाक न लें। मसीही विवाह समारोह में, दोनों पक्षों के परिवार, मित्र गण और अन्य लोगों इस बात के गवाह होते हैं कि इन दोनों ने विवाह के सन्दर्भ में परमेश्वर से,आपस में प्रतिज्ञाएं की हैं कि वे अपने जीवन की हर परिस्थितियों में एक दूसरे के प्रति विश्वासयोग्य रहेगें और एक दूसरे की सहायता करेगें।

(3) मसीही विवाह का अर्थ: एक देह हो जाना है।

मसीही विवाह उस बिन्दू को चिन्हित कर देता है जहां पर पति और पत्नी अपने जीवन के हर पहलू में एक हो सकते हैं। उन्हें आत्मिक,मानसिक,भावनात्मक,सामाजिक और शारीरिक तौर पर एक हो जाना चाहिए। एक देह होना तो एकता की पराकाष्ठा है जिसे परमेश्वर द्वारा विवाह के उपरान्त तथा विवाह के भीतर ही अनुमति मिलती है। विवाह परमेश्वर की ओर से प्रमाणिकता है कि अब पुरूष और स्त्री हमबदन हो सकते हैं। विवाहित पुरुष और स्त्री के बीच सहवास या यौनाचार से परमेश्वर प्रसन्न होते हैं,परन्तु यह विवाह के सीमित दायरे में ही होना चाहिए। इसी कारण परमेश्वर विवाह *पूर्व* व विवाह के बाहर सहवास को पूरी तरह से निषेध ठहराते हैं(इब्रानियों 13:4)। शारीरिक एकता और उत्तम प्रतीत होती है जब दंपत्ति आपसी रिश्तों के हर क्षेत्र में उन्नति करते हैं।

2.मसीही विवाह समारोह एक सार्वजनिक सामाजिक और धार्मिक उत्सव है।

शिक्षा दें/ बाइबल में विवाह कभी गुप्त में नहीं किया गया,वरन यह एक सार्वजनिक उपलक्ष्य है।

(1) मसीही विवाह एक पारिवारिक सार्वजनिक उपलक्ष्य हुआ करता था।

पुराने समय में "विवाह दौरान की जानी वाली प्रतिज्ञाएं" पूरे परिवार के लिए एक महत्वपूर्ण बात हुआ करती थी। ऐतिहासिक तौर पर यह दुल्हा व दुल्हन दोनों के ही परिवार इस उपलक्ष्य में मुख्य भूमिकाएं अदा किया करते थे। इसमें जीवन साथी का चुनाव(उत्पत्ति 21:21),कई बार दुल्हन के परिवार के लोगों को महर के रूप में उपहार देना(उत्पत्ति 29:18, 34:12) और दुल्हा व दुल्हन को उपहार देना शामिल हुआ करता था(उत्पत्ति 24:59,61,1राजा 9:16)।

आधुनिक काल में विवाह के सम्बन्ध में,जीवन साथी तथा विवाह समारोह के बारे में अपने माता पिता की सलाह मांगने को ज्यादातर अपने माता पिता का आदर करने के रूप में देखा व सराहा जाता है। विवाह में उपहार देना, हालांकि बाइबल के आधार पर जरूरी नहीं है।

(2) मसीही विवाह समारोह एक सार्वजनिक सामाजिक और धार्मिक उत्सव है।

मसीही विवाह में निम्नलिखित तत्व भी शामिल होते हैं: दुल्हन और दूल्हा विवाह के विशेष कपड़े पहनते हैं(भजन 54:13-14)। उनका साथ देने के लिए दुल्हन की सहेलियां और दूल्हें के दोस्त होते हैं(भजन 45:14,यूहन्ना 3:29)। दूल्हा और उसके मित्र दुल्हन के घर आते हैं और दुल्हन की सहेलियां उनसे मिलने को जाती है। उसके उपरान्त वे दुल्हन के घर से लेकर दूल्हें के घर तक गाजे बाजे के साथ उस स्थान पर जाते हैं जहां उनका विवाह पढ़ा जाने वाला होता है। रात का समय होने के कारण अगर बारातियों के पास मशाल हो तो उन्हें भी बारात को हिस्सा बनने के लिए निमन्त्रण दिया जाता था(मत्ती 22:1-14,यूहन्ना 2:1-10,न्यायियों 14:17)।

इस विवाह समारोह का सबसे महत्वपूर्ण और गम्भीर भाग विवाह विधि के दौरान आपस में वाचा बांधना होता था जिसमें स्वयं परमेश्वर उनका साक्षी था(मलाकी 2:14, नीतिवचन 2:17,यहेजकेल 16:8)! सदियों से मसीहियों ने अपने विवाह समारोह को आयोजन परमेश्वर,उनके परिवार,मित्रों और मसीही भाई व बहनों की उपस्थिति में सार्वजनिक तौर पर किया है।

(3) विवाह की समाप्ति केवल विवाह समारोह के बाद।

विवाह समारोह के पश्चात ही विवाह समापन होता था(उत्पत्ति 29:21-23,व्यवस्थाविवरण 22:13-21; इब्रानियों 13:4)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण :** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों
2. "प्रभु भोज" पर -किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। इफिसियों 2-5** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **याद करें।** नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। **(4) उचित समय: सभोपदेशक 8:5 ख-6।** रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 6** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।